पंजीयन क्रं. 06/09/01/04737/04

विचार मासिक पत्रिका

कुल पृष्ठ 24, वर्ष 3, अंक 34 माह - जनवरी 2022, मूल्य - निःशुल्क

आपके विकास को समर्पित

॥विचार समिति॥

(स्थापना वर्ष 2003)

महिलाओं को गोबर सुखाने की विधि बताते हुए कपिल मलैया

पदाधिकारी

कपिल मलैया
संस्थापक व अध्यक्ष
मो. 9009780020

सुनीता जैन
कार्यकारी अध्यक्ष
मो. 9893800638

सौरभ रांधेलिया
उपाध्यक्ष
मो. 8462880439

आकांक्षा मलैया
सचिव
मो. 9165422888

विनय मलैया
कोषाध्यक्ष, मो. 9826023692

नितिन पटैरिया
मुख्य संगठक, मो. 9009780042

अखिलेश समैया
मीडिया प्रभारी, मो. 9302556222

हरगोविंद विश्व
मार्गदर्शक

राजेश सिंघई
मार्गदर्शक

श्रीयॉश जैन
मार्गदर्शक

गुलझारीलाल जैन
मार्गदर्शक

प्रदीप रांधेलिया
मार्गदर्शक

अंशुल भार्गव
मार्गदर्शक

विचार समिति का मासिक प्रकाशन

विचार मासिक पत्रिका

वर्ष - 3, अंक - 34, जनवरी - 2022

संपादक

आकांक्षा मलैया

प्रबंधक व प्रकाशक

विचार समिति

स्वामित्व

विचार समिति

258/1, मालगोदाम रोड, तिलकगंज वार्ड,
आदिनाथ कार्स प्रा. लिमि.
के पीछे, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

Email: sanstha.vichar@gmail.com
Phone: 9575737475
07582-224488

मुद्रण

तरूण कुमार सिंघई, अरिहंत ऑफसेट
पारस कोल्ड स्टोरेज, बताशा गली,
रामपुरा वार्ड, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

इस अंक में

आलेख :-

1. 'मौन की गूंज' पुस्तक के जीवनोपयोगी अंश 4
2. थोड़ा डर, पूरा सच और आवश्यक सावधानी - यही है वायरस की कहानी 8
3. गाय के गोबर से जैविक खाद कैसे बनायें 10

विचार समिति की गतिविधियां :-

1. समाज का उत्थान तभी संभव है जब हमारी माताएं-बहनें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकेंगी : मलैया 12
2. 10वीं वाहिनी बिसवल और मंगलगिरी का समिति द्वारा निरीक्षण 13
3. नेकी की दीवार से 300 लोगों की मदद 14
4. विचार समिति गोबर से जुड़े सभी उत्पादों पर कार्य करेगी : श्रीयांश जैन 14
5. ओ.पी. जिंदल यूनिवर्सिटी की छात्रायें विचार कार्यालय में कर रही हैं इंटर्नशिप 15
6. स्वानंद गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र नागपुर से आई टीम ने दिया गोमय उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण 17
7. समिति ने जयपुर में स्वदेशी उत्पादों का अवलोकन और प्रशिक्षण प्राप्त किया 20
8. गणतंत्र दिवस पर सागरवासी करेंगे 1100 जगह झंडावंदन 22

मीडिया कवरेज :- 23

'मौन की गूंज' पुस्तक के जीवनोपयोगी अंश

जून 1995 से परम पूज्य गुरूदेव श्री श्री रविशंकर जी के साप्ताहिक ज्ञान-पत्रों का सिलसिला आरंभ हुआ। यह कोई किताबी सिद्धांत या दार्शनिक ज्ञान की व्याख्या नहीं, ये ज्ञान-पत्र सच्चे साधक के लिए गुरू के अंतरंग अनमोल वचन हैं। इस किताब से अनेक लोगों को अपनी समस्याओं का समाधान मिला है।

इच्छाएं

इंद्रिय सुखों की इच्छाएं विद्युत की तरह है, जैसे-जैसे वे विषय वस्तुओं की ओर बढ़ती है, निष्प्रभावी हो जाती है। अपनी कुशलता से यदि तुम इच्छाओं को अपने भीतर मोड़ सको - अपने अस्तित्व के केंद्र की ओर - तो तुम्हें मिलेगा एक और आयाम - चिरन्तन सुख, रोमांच, परमानंद और शाश्वत प्रेम का। वासना, लोभ और ईर्ष्या इसलिए शक्तिशाली है क्योंकि ये केवल ऊर्जा है और तुम ही इनके स्त्रोत हो - वह विशुद्ध ऊर्जा। निष्ठा और भक्ति तुम्हारी ऊर्जा को शुद्ध बनाए रखती है, तुम्हें उन्नत करती है। जब तुम यह समझ लेते हो कि तुम स्वयं ही सुख की विद्युत धारा हो, तुम्हारी लालसाएं घटने लगती हैं और प्रशांति आती है। मृत्यु निश्चित है - यह याद रखने से तुम वर्तमान क्षण में सजीव रहते हो, राग और द्वेष से मुक्त।

संघर्ष

जब तुम सामंजस्यपूर्ण वातावरण में होते हो, तुम्हारा मन संघर्ष पैदा करने के लिए बहाने ढूंढ़ता है। प्राय: छोटी-छोटी बातें बड़ी हलचल मचाने के लिए पर्याप्त हैं और जब तुम असामंजस्यपूर्ण वातावरण में होते हो, तब तुम शांति खोजते हो। स्वयं से यह प्रश्न करो : क्या

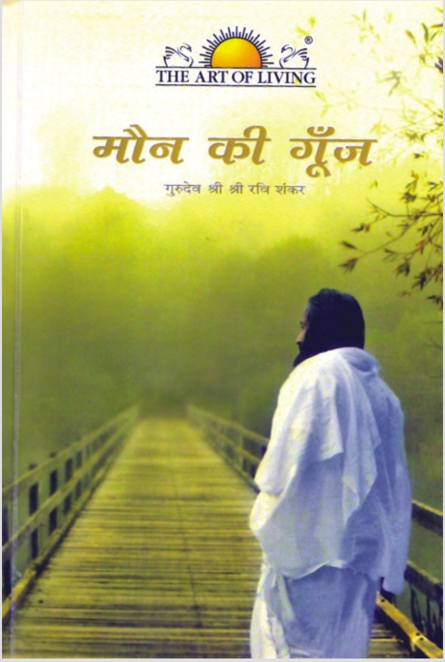

तुम हर परिस्थिति में शांति देखते हो या इस चेष्टा में रहते हो कि मत-भेदों को बढ़ाकर अपना मत प्रमाणित करो? जब तुम्हारा जीवन संकट में होता है तब तुम्हे यह शिकायत नहीं होती कि दूसरे तुमसे प्रेम नहीं करते हैं। पर जब तुम सुरक्षित और निर्भय होते हो, तब तुम चाहते हो कि लोगों का ध्यान तुम पर रहे। कुछ व्यक्ति दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए ही लड़ाई-झगड़े उत्पन्न करते हैं।

नकारात्मकता का बीज और संघर्ष करने की तुम्हारी प्रवृत्ति केवल साधना द्वारा ही खत्म हो सकती है।

उदासीनता

आदर्शवाद का अभाव आज के युवकों में उदासीनता का मुख्य कारण है। इन युवकों को जीवन अर्थहीन प्रतीत होता है। वे या तो इस प्रतिस्पर्धा भरे संसार से भयभीय हैं या अत्यधिक उत्प्रेरकों से ग्रस्त हैं। इन्हें प्रेरणा की जरूरत है और आध्यात्मिकता वह प्रेरणा है जो ऊर्जा को बनाये रखती है। उदासीनता तब आती है जब समस्याओं से जूझने में जोश की कमी हो। आक्रमकता उदासीनता का प्रतिरोधक है। उदासीनता है ऊर्जा की कमी, ऊर्जा का आवेग है क्रोध और आक्रमकता। जब अर्जुन उदासीन थे, कृष्ण ने उन्हें लड़ने की प्रेरणा दी और अर्जुन में पुनः उत्साह आया। यदि तुम उदासीन हो, 'प्रोजेक' दवा की आवश्यकता नहीं, बस, किसी भी सिद्धांत के लिए लड़ो। आक्रमकता यदि कोई हद को पार कर जाए तो वह वापस उदासीनता में ले जाती है। ऐसा ही राजा अशोक के साथ हुआ जो कलिंग का युद्ध तो जीत गए पर उदासीन हो गए। उन्हें बुद्ध की शरण में जाना पड़ा। बुद्धिमान वे हैं जो न तो आक्रमकता में फंसते हैं और न ही उदासीनता में – एक योगी का यह स्वर्णिम सिद्धांत है। जरा जागो और पहचानो की तुम योगी हो।

सहनशीलता

न लोगों को स्वीकार करो और न ही उन्हें सहन करो। कई व्यक्ति सोचते हैं कि सहन करना सद्‌गुण है पर वास्तव में सहन नकारात्मक शब्द है। यदि तुम्हें कुछ पसंद है, तुम्हें उसको सहन नहीं करना पड़ता। सहन एक गहरी अरूचि को संकेत करता है। सहन एक अलगाव का भाव, संकुचित विचार और सीमित सजगता को इंगित करता है। जब तुम किसी चीज को सहन करते हो, यह अस्थायी स्थिति है। इसका अर्थ है तुम कुछ समय के लिए उसे बर्दाश्त कर रहे हो। सहन एक सम्भावी ज्वालामुखी है। यदि तुम सहन कर रहे हो, इसका अर्थ है तुम अब भी किसी चीज को पकड़े बैठे हो। स्वीकारना भी नकारात्मक है। तुम सिर्फ उसे स्वीकार करते हो जो तुम्हें प्रिय नहीं।

***प्रश्न** : लोग जैसे भी हैं, हमें उन्हें वैसे ही स्वीकार करना है न?*

यदि तुम उन्हें प्यार नहीं करते, तब तुमको उन्हें स्वीकार करना ही पड़ेगा। व्यक्ति जैसे हैं, उन्हें वैसे स्वीकार न करो, बस, वे जैसे हैं, उन्हें वैसे ही प्रेम करो।

करूणा

करूणा दो प्रकार की होती है – एक करूणा होती है ज्ञानी की ओर दूसरी अज्ञानी की। अज्ञानी व्यक्ति की करूणा कर्म के फल के प्रति होती है जैसे बीमारी या दुख को दूर करना। परंतु ज्ञानी व्यक्ति की करूणा ज्ञान के अभाव के प्रति होती है – जो बीमारी और दुख का मुख्य कारण है। पीड़ा के प्रति करूणा अज्ञानता है। दुख कर्मों के कारण है, और यदि तुम्हें कर्म में विश्वास है, तो फिर करूणा कहां? हर व्यक्ति अपने कर्मों का फल भोगता है। यदि न्यायाधीश को अपराधियों के लिए दया होगी, तो कारागार खाली रहेंगे। तो क्या न्यायाधीश अपराधियों के

प्रति क्रूर है? नहीं। न्यायाधीश की करूणा ज्ञान के अभाव के लिए हैं, अपराधियों की पीड़ा के लिए नहीं, यह अपराधियों का कर्म है। प्राय: व्यक्ति करूणा को कृत्य मानते हैं, एक क्रिया। जानो कि करूणा तुम्हारा स्वभाव है। तब तुम देखोगे कि कर्म और करूणा परस्पर विरोधी नहीं, वरन् एक दूसरे के पूरक हैं।

कर्म

कुछ कर्म बदले जा सकते हैं और कुछ नहीं। जैसे हलवा बनाते समय चीनी या घी की मात्रा यदि कम हो, पानी अधिक या कम हो, उसे ठीक किया जा सकता है पर हलवा पक जाने पर उसे फिर से सूजी में नहीं बदला जा सकता। मट्ठा यदि अधिक खट्टा हो, उसमें दूध या नमक मिलाकर पीने लायक बनाया जा सकता है। पर उसे वापस दूध में बदला नहीं जा सकता। प्रारब्ध कर्म बदले नहीं जा सकते। संचित कर्म को आध्यात्मिक अभ्यास द्वारा बदला जा सकता है। सत्संग सभी बुरे कर्मों के बीज को खत्म करता है। जब तुम किसी की प्रशंसा करते हो, तुम उसके अच्छे कर्म ले लेते हो। जब तुम किसी की बुराई करते हो, तुम उसके बुरे कर्म के भागीदार बनते हो। इसे जानो और अपने अच्छे और बुरे दोनों ही कर्मों को ईश्वर को समर्पित करके स्वयं मुक्त हो जाओ।

सत्य

सत्य वह है जो बदलता नहीं। अपने जीवन को देखो और पहचानो कि वह सब जो बदल रहा है, सत्य नहीं। इस दृष्टि से देखने पर तुम पाओगे कि तुम केवल असत्य से घिरे हुए हो। असत्य को पहचानने पर तुम उससे मुक्त होते हो। जब तक तुम असत्य को पहचानोगे नहीं, तुम उससे मुक्त नहीं हो सकते। स्वयं के जीवन के अनुभव तुम्हें तुम्हारे असत्यों की पहचान कराते हैं। जैसे-जैसे जीवन में परिपक्वता आती है, तुम पाते हो कि सभी कुछ असत्य है - घटनाएं, परिस्थितियां, लोग, भावनाएं, विचार, मत-धारणाएं, तुम्हारा शरीर - सभी असत्य हैं और तभी सच्चे अर्थ में सत्संग (सत्य का संग) होता है। मां के लिए बच्चा तब तक असत्य नहीं है जब तक बालिग नहीं हो जाता। बच्चे के लिए मिठास असत्य नहीं और किशोर के लिए सैक्स असत्य नहीं। ज्ञान यदि शब्दों तक सीमित है, तो यह असत्य है परंतु अस्तित्व के रूप में यह सत्य है। प्रेम भावना के रूप में सत्य नहीं। अस्तित्व के रूप में यह सत्य है।

समर्पण

समर्पण में सिर झुककर हृदय से मिलता है जो सिर झुकता नहीं, उसका कोई मूल्य नहीं। जो सिर अकड़कर रहता है, उसको कभी न कभी झुकना ही पड़ता है। चाहे समर्पण में झुके या लज्जावश। जो मस्तिष्क समर्पण में झुकता है, उसे शर्म से कभी नहीं झुकना पड़ता। शर्म घमंड के साथ जुड़ी है, शर्मीलापन प्रेम के साथ। देखो बच्चे कैसे शर्मीले हैं - यह उनमें स्वाभाविक है। शर्म समाज से मिलती है, समाज की देन है। शर्म अपराध की भावना जगाती है, शर्मीलापन तुम्हारे सौन्दर्य को बढ़ाता है। शर्मीलापन बनाये रखो और शर्म से मुक्त हो जाओ।

समझ

समझ तीन प्रकार की होती है : बुद्धि के स्तर पर, अनुभव के स्तर पर और सत्तात्मक समझ।

बौद्धिक समझ 'हां' कहती है – वह स्वीकार करती है। अनुभवी समझ महसूस करती है – वह प्रत्यक्ष है। सत्तात्मक समझ अकाट्य है, तर्क के परे – यह तुम्हारा स्वभाव बन जाती है। यदि तुम्हारी समझ केवल बुद्धि के स्तर पर है, तुम सोचते हो कि तुम सब कुछ जानते हो। अधिकतर धर्मशास्त्री इसी श्रेणी में आते हैं। बुद्धि के स्तर पर तुम जान सकते हो कि तुम खोखले और खाली हो, परंतु वास्तव में खोखले और खाली महसूस करना अलग ही बात है, जो कुछ भी तुम सुनते हो, केवल शब्द जाल ही रह जाएगा यदि उसकी समझ अनुभव के रूप में नहीं, जो भावना के स्तर पर अधिक होता है। जब एक अनुभव होता है, तुम उसके बारे में और अधिक जानना चाहते हो और तुम साधक बन जाते हो। सत्तात्मक समझ में अनुभव व बुद्धि, दोनों स्तरों की समझ निहित होती है – फिर भी इन दोनों सेपरे है। तो, सत्तात्मक समझ को कैसे हासिल करें? ऐसा कोई निर्धारित मार्ग नहीं – जब फल पक जाता है, वह गिर जाता है।

मौन

कुछ प्रश्नों के उत्तर केवल मौन में ही दिए जा सकते हैं। सभी उत्तरों का लक्ष्य मौन। यदि एक उत्तर मन को शांत नहीं करता, तो वह कोई उत्तर नहीं है। विचार स्वयं में लक्ष्य नहीं होते। उनका लक्ष्य है मौन। जब तुम यह प्रश्न पूछते हो, 'मैं कौन हूं?' तुम्हें कोई उत्तर नहीं मिलता – केवल मौन। वही वास्तविक उत्तर है। तुम्हारी आत्मा मौन की प्रतिमूर्ति है, 'ठोस' मौन है और यही मौन विवेक है, ज्ञान है। विचारों को शांत करने का सरल उपाय है भावनाओं को जाग्रत करना क्योंकि केवल भावनाओं के द्वारा शांति, आनंद व प्रेम उदित हो सकते हैं। ये सभी तुम्हारा स्वरूप है। 'मैं कौन हूं?' प्रश्न का एकमात्र उचित उत्तर है मौन। शब्दों में दिए जाने वाले सभी उत्तरों को तुम्हें छोड़ना है जैसे, 'मैं कुछ नहीं हूं' या 'मैं ब्रह्माण्डीय आत्मा हूं' या 'मैं आत्मा हूं'। केवल इस एक प्रश्न से जुड़े रहो, 'मैं कौन हूं?'। शेष सभी उत्तर केवल विचार है और विचार कभी पूर्ण नहीं हो सकते। केवल मौन पूर्ण है।

आर्ट ऑफ लिविंग की शिक्षक **कीर्ति जोशी** ने बताया कि मैं पिछले 12 सालों से आर्ट ऑफ लिविंग परिवार से जुड़ी हूं। **परम पूज्य गुरूदेव श्री श्री रविशंकर जी** से कई बार मिलने का मौका मिला है। जब भी उनसे मिलते हैं और उनकी कही बातों को सुनते हैं तो लगता है कि हम कितने भाग्यशाली हैं, जो हमें ऐसे गुरू मिले। जिनके विशाल हृदय में हर किसी के लिए चाहे वह किसी भी देश, धर्म या जाति का हो, उनके मन में प्रेम और करूणा ही रहती है। वे मनुष्य के अंदर बैठे ईश्वर को ही देखते हैं और उसी की सेवा में निरंतर रहते हैं। आर्ट ऑफ लिविंग के विभिन्न कार्यक्रमों जैसे आर्ट ऑफ एक्सेल, हैप्पीनेस प्रोग्राम, येस प्रोग्रामों को करने से और इसके अलावा पूज्य गुरूदेव द्वारा अत्यंत सरल भाषा में ज्ञान पत्रों में जीवनोपयोगी मूल ज्ञान सहज ही समझ आ जाता है। **'मौन की गूंज'** किताब ठीक मनोभावों, सत्य आधारित एक ज्ञान पात्र है।

थोड़ा डर, पूरा सच और आवश्यक सावधानी - यही है वायरस की कहानी

डॉ. अखिलेश जैन
कंसलटिंग चेस्ट फिजिशियन, सागर

ओमीक्रॉन एक नया वेरिएंट (अफ्रीकन वेरिएंट) जिसने सभी लोगों के मन में भय का वातावरण पैदा कर दिया है और तीसरी लहर आने की आशंका और संकेत है, विभिन्न प्रदेशों में धीरे धीरे नए स्ट्रैन के केस बढ़ते जा रहे हैं। ओमीक्रॉन के बारे में सबसे महत्वपूर्ण जानकारी जो आ रही है कि इस वेरिएंट के जेनॉमिक स्ट्रक्चर में बहुत अधिक म्युटेशन देखे गए हैं। सबसे पहले जेनॉमिक स्ट्रक्चर और म्युटेशन को बड़े ही सरल शब्दों में समझने की कोशिश करते हैं। देखिये कोई भी वायरस हो उसका एक जीनॉमिक स्ट्रक्चर होता है ऐसे ही कोरोना वायरस का भी अपना एक जीनॉमिक स्ट्रक्चर है जो की उसके लक्षणों को निर्धारित करता है।

वायरस के जीन (जीनॉमिक स्ट्रक्चर) में होने वाले परिवर्तन को म्युटेशन कहते हैं जो की अलग अलग वेरिएंट को जन्म देते है। वायरस का रेप्लीकेशन (प्रतिकृति) ही इन म्युटेशन का मुख्य कारण होता है। वायरस के रेप्लीकेशन के दौरान उसके जेनेटिक स्ट्रक्चर में होने वाले परिवर्तन (म्युटेशन) ही नये वेरिएंट का कारण होते हैं। वायरस जितना एक दूसरे में स्प्रेड (फैलेगा), उसके रेप्लीकेशन की संभावना बढ़ेगी अर्थात नये वेरिएंट की उत्पत्ति की संभावनाएं और अधिक हो जाती है वायरस में जितने ज्यादा म्युटेशन होंगे अर्थात उसके जेनॉमिक स्ट्रक्चर में जितने ज्यादा परिवर्तन होंगे नये वेरिएंट की ओरिजनल वायरस से समानतायें कम होती जाएगी, असामानतायें बढ़ती जाएगी, जितनी असमानता बढ़ती जाएगी, वायरस के लक्षणों में उतना ही परिवर्तन होता जायेगा।

किसी भी वेरिएंट की गंभीरता को मुख्यता तीन तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया जाता है।

1. उसके फैलने की क्षमता अर्थात एक ग्रसित व्यक्ति कितने लोगों को ग्रसित कर सकता है मतलब वेरिएंट की संक्रमण दर क्या है?

2. वह वेरिएंट ग्रसित व्यक्ति में कितनी गंभीर बीमारी ला सकता है।

3. नये वेरिएंट पर पहले से आयी हुई प्रतिरोधक क्षमता (या तो वैक्सीन के माध्यम से आयी हो या पहले अन्य वेरिएंट के माध्यम से हुए इन्फेक्शन से आयी हो) का कितना प्रभाव है।

जहां तक ओमीक्रॉन वेरिएंट की बात की

जाये, जो जानकारी बाहर के देशों से मिल रही है उनके अनुसार।

1. इस वेरिएंट की संक्रमण दर ओरिजनल वायरस से बहुत ज्यादा है।

2. जहां तक बीमारी की गंभीरता के बारे में जो जानकारी प्राप्त हो रही है इस वेरिएंट से ग्रसित व्यक्ति बहुत ही कम लक्षणों के साथ आ रहे हैं चूंकि बहुत अधिक म्युटेशन की वजह से नये वेरिएंट के लक्षण थोड़े अलग हैं। जी मचलाना, सिर दर्द, हल्का बुखार, थकावट जैसे लक्षणों से ग्रसित व्यक्ति प्रेजेंट करता है।

अभी तक मिले केस के अनुसार हॉस्पिटल में भर्ती और गंभीर होने की दर पहले से कम है अर्थात अधिकतर मरीज हॉस्पिटल में भर्ती हुए बिना ठीक हो रहे हैं लेकिन जैसा कि मैं पहले भी बता चुका हूं जैसे-जैसे वेरिएंट फैलेगा इसमें नये म्युटेशन हो सकते हैं जो की एक गंभीर लक्षणों वाले वेरिएंट की उत्पत्ति कर सकते हैं इसलिए इस वायरस का प्रसार रोकना बहुत जरूरी है, जो केवल संभव हो सकता है मास्क का सही ढंग से उपयोग करने से, सामाजिक दूरी का पालन करने से और हाथ धोने के नियमों का सही ढंग से पालन करने से।

जहां तक वैक्सीनेशन की बात की जाये और पहले इन्फेक्शन से आई हुई प्रतिरोधक क्षमता की बात की जाये, तो मेरा मानना है निश्चित ही ऐसे व्यक्ति जो की पहली लहर और दूसरी लहर में संक्रमित हो चुके हैं और ऐसे लोग जिनके दोनों वैक्सीन के डोज कम्पलीट हो चुके हैं उनके ओमीक्रॉन वेरिएंट के कारण गंभीर बीमारी होने के ना के बराबर चांस है क्योंकि पिछले इन्फेक्शन से आने वाली प्रतिरोधक क्षमता नये वेरिएंट पर जरूर काम करेगी जिसे विज्ञान की भाषा में 'क्रॉस प्रोटेक्शन' कहते हैं परन्तु मास्क, हैंडवाश और सामाजिक दूरी रखना सभी लोगों के लिए अनिवार्य है।

ऐसे लोग जो वैक्सीनेटेड नहीं हैं या कोरोना की पहली अथवा दूसरी लहर में संक्रमित नहीं हुए हैं उनके अंदर गंभीर बीमारी होने की बहुत ज्यादा संभावना है।

जहां तक बूस्टर डोज और बच्चों में टीकाकरण की बात की जाये, बूस्टर डोज निश्चित ही वैक्सीन से आयी हुई प्रतिरोधक क्षमता को अधिक मजबूत करेगा और मुख्यत: ऐसे लोग जो पहले से गंभीर बीमारियों से ग्रसित हैं उन्हें बूस्टर डोज जरूर प्रभावकारी सिद्ध होगा। 18 साल से कम बच्चों में भी वैक्सीनेशन बहुत आवश्यक है। अनेक देशों में बूस्टर डोज़ और बच्चों में वैक्सीनेशन आरम्भ हो चुका है। विज्ञान की इस वेरिएंट पर खोज जारी हैं जैसे-जैसे समय निकलेगा और जानकारी इस वेरिएंट के बारे में मिलती रहेगी।

आखिरी में केवल इतना कहूंगा डर और सच्चाई के बीच में सावधानी बहुत जरुरी है। मैं जनता से यही अपील करूंगा।

- वैक्सीन के दोनों डोज हमारी जिंदगी के लिए बहुत जरुरी है।
- सही ढंग से मास्क का उपयोग करना बहुत अनिवार्य है।
- हाथ धोनें के नियमों का सही तरीके से पालन करें।
- सामाजिक दूरी का पालन करें।

गाय के गोबर से जैविक खाद कैसे बनायें

कार्तिक मलैया
छात्र - बीएससी
(द्वितीय वर्ष)
एग्रीकल्चर

किसानों की फसल अच्छी हो इसके लिए मिट्टी, सिंचाई, जलवायु काफी कुछ मायने रखता है। इतना ही मायने रखता है फसल के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला खाद या उर्वरक। सामान्यत: किसान रासायनिक उर्वरक का इस्तेमाल धड़ल्ले से करते हैं, लेकिन रासायनिक उर्वरक के कुछ हानिकारक प्रभाव भी होते हैं। ऐसे में कृषि वैज्ञानिक जैविक खाद के इस्तेमाल पर जोर देते हैं।

रासायनिक उर्वरक के लिए किसानों को पैसे खर्च करने होते हैं, जबकि जैविक खाद किफायती होते हैं। इसे आप खुद भी तैयार कर सकते हैं। खेतों की मिट्टी के लिए जैविक खाद नुकसानदायक भी नहीं होते हैं। इसके लिए आपको बहुत कुछ चाहिए भी नहीं होता है। देशी गाय के गोबर वगैरह से बनाया जा सकता है।

कैसे करें तैयारी – एक प्लास्टिक के ड्रम में गोबर (देशी गाय) डालकर इसमें गोमूत्र मिला लें फिर इसमें गुड़ (उपयोग में ना आने वाला गुड़) मिला लें। इसमें पिसी हुई दालों को डाल दें। आखिर में इस मिश्रण को एक किलो मिट्टी में सान लें।

खाद का सही मात्रा में बनाए मिश्रण : घर पर जैविक खाद बनाने के लिए सबसे ज्यादा

गोबर से वर्मी कम्पोस्ट खाद बनाना।

जरूरी है खाद बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले पदार्थों की मात्रा। जैविक खाद बनाने के लिए 10 किलो गोबर,10 लीटर गोमूत्र, एक किलो गुड, एक किलो चोकर, एक किलो मिट्टी का मिश्रण तैयार करना चाहिए। इन पांच तत्वों को आपस में मिलाने के लिए हाथ से या किसी लकड़ी के डंडे की मदद लें। मिश्रण बन जाने के बाद इसमें 100 लीटर पानी डाल दें। अब इसे 7 दिनों तक ढक कर रख दिजिए। ध्यान रखें की इस ड्रम पर धूप न पड़े। अच्छी खाद पाने के लिए इस घोल को प्रतिदिन एक बार अवश्य मिलाएं। 7 दिन बाद ये खाद बन कर तैयार हो जाएगी। यह खाद सूक्ष्म जीवाणु से भरपूर रहेगी खेत की मिट्टी की सेहत के लिये अच्छी रहेगी।

खाद में पाए जाने वाले सूक्ष्म जीवाणु बहुत फायदेमंद – इस तरह तैयार खाद में सूक्ष्म जीवाणु भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं, जो खेतों की मिट्टी की सेहत के लिए फायदेमंद होते हैं. इस जैविक खाद से न केवल फसल जल्दी विकसित होती है बल्कि फसल की जड़ों को भरपूर मात्रा में आयरन भी मिलता है। यह पौधे की जड़ों को नाइट्रोजन भी प्रदान करता है। इसके अलावा पौधे की जड़ों में कैल्शियम की सही मात्रा भी सुनिश्चित करता है।

गोबर की खाद का गमलों व भूमि पर लाभ दायक प्रभाव –

– मिट्टी में वायु संचार बढ़ता है।

– मिट्टी में जलधारण व जल सोखने की क्षमता बढ़ती है।

– मिट्टी में टाप का स्तर सुधरता है।

– पौधों की जड़ों का विकास अच्छा होता है।

– मिट्टी के कण एक–दूसरे से चिपकते हैं। मिट्टी का कटाव कम होता है।

– भारी चिकनी मिट्टी तथा हल्की रेतीली मिट्टी की संरचना का सुधार होता है।

समाज का उत्थान तभी संभव है जब हमारी माताएं-बहनें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकेंगी : कपिल मलैया

महिला स्वरोजगार के लिए समिति की टीम ने किया ग्राम मोठी का भ्रमण

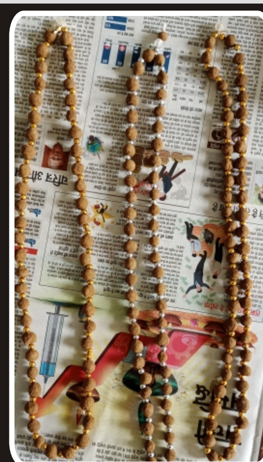

ग्राम मोठी में महिलाओं द्वारा गोमय वंधनवार, झूमर, मालाएं बनाई। समिति के संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने ग्राम मोठी में निर्मला राजपूत का सम्मान किया

समिति बुंदेलखंड के समग्र विकास पर निरंतर कार्य कर रही है। विचार स्थाई प्रकल्प के माध्यम से महिला स्वरोजगार प्रकल्प के तहत ग्राम मोठी में निर्मला राजपूत की टीम द्वारा गोबर की सामग्री में दिए, गुल्लक, गोमय मालाएं, वंधनवार, धूपवत्ती आदि बनाए जा रहे हैं। इन समूह के माध्यम से 180 महिलाएं सकुशलता पूर्वक गोबर से निर्मित स्वदेशी उत्पाद से स्वरोजगार स्थापित कर रही हैं। सभी महिलाओं के प्रोत्साहन हेतु विचार टीम ने मोठी ग्राम का भ्रमण किया। समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने स्व सहायता समूह की अध्यक्ष निर्मला राजपूत को शुभकामनाएं देते हुए गोमय निर्मित माल्यार्पण कर टिफिन बाक्स भेंट किया साथ ही उन्होंने कहा कि स्वदेशी उत्पाद के माध्यम से इन सभी महिलाओं ने नई पहचान कायम की है। समाज का उत्थान तभी संभव है जब हमारी माताएं, बहनें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकेंगी। हम सभी मिलकर जीवन में सभी समस्याओं पर जीत हासिल करेंगे। समृद्धि और खुशहाली भरे जीवन की ओर आगे बढ़ेंगे। इस अवसर पर समिति सचिव आकांक्षा मलैया ने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि हम स्वदेशी उत्पाद के माध्यम से सागर शहर को नई पहचान से जोड़ेंगे। बुंदेलखंड को पिछड़ेपन से निकालकर एक मिसाल पेश करेंगे। कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने सभी महिलाओं का उत्साहवर्धन करते हुए महिलाओं से भेंट की एवं नए उत्पादों के संबंध में जानकारी प्रदान की।

10वीं वाहिनी बिसवल और मंगलगिरी का समिति द्वारा निरीक्षण

10वीं वाहिनी विसबल मकरोनिया का भ्रमण करती हुई विचार टीम।

10वीं वाहिनी बिसवल मकरोनिया - पर्यावरण संरक्षण के लिए 10वीं वाहिनी बिसवल मकरोनिया में 19 जून 2021 को समिति सदस्यों एवं शहरवासियों के सहयोग से 10वीं वाहिनी पहाड़ी को हरा-भरा बनाने के लिए ग्यारह सौ पौधों को रोपा गया था। यह पौधे धीरे-धीरे वृक्षों का आकार ले रहे हैं। यथा स्थिति देखने के लिए 4 दिसंबर को विचार टीम ने संकल्प वन एवं ओशो वन का निरीक्षण किया। स्थिति का जायजा लेते हुए समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने नए पौधे लगाने एवं पानी की कमी को पूरा करने के लिए बटालियन निरीक्षक से चर्चा की साथ ही उन्होंने टीम को रजनीश ओशो ध्यान स्थली की जानकारी देते हुए बताया कि पास ही की पहाड़ी पर रजनीश ओशो को महुए के पेड़ पर 12 फरवरी 1956 को मध्य रात्रि में ज्ञान प्राप्त हुआ था। इस महान घटना को सतौरी कहा जाता है।

मंगलगिरी - समिति मंगलगिरी को हरा भरा बनाने के लिए पिछले कई वर्षों से वृक्षारोपण करवाती आ रही है। इस वर्ष मियावाकी पद्धति से 1500 पौधों को रोपा गया था। अभी तक समिति द्वारा मंगलगिरी में 9000 पौधे लगा चुकी है जो अब 6 से 8 फीट की ऊंचाई पा चुके हैं। भ्रमण में विचार समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत, सचिव आकांक्षा मलैया, मीडिया प्रभारी अखिलेश समैया, मनोज राय, सुरेश पिंजवानी, भुवनेश सोनी, राहुल अहिरवार, विनय चौरसिया, समिति में इंटर्नशिप कर रहीं छात्राएं वैष्णवी पाण्डेय, स्वास्तिका पानीगृही, श्री लक्ष्मी एस, उपस्थित थे।

नेकी की दीवार से 300 लोगों की मदद

नेकी की दीवार का शुभारंभ विचार समिति एवं रांधेलिया परिवार के सहयोग से कटरा के मध्यस्थ में हुआ था। यह बहुत ही सुखद बात है कि इस दीवार के माध्यम से 300 से अधिक लोगों की इस कड़ाके की ठंड में मदद की जा चुकी है।

विचार समिति गोबर से जुड़े सभी उत्पादों पर कार्य करेगी : श्रीयांश जैन

समिति ने गणेश चतुर्थी के अवसर पर स्वदेशी उत्पादों के साथ कटरा बाजार में स्वदेशी उत्पाद केंद्र का शुभारंभ किया था। इस केंद्र का उद्देश्य समिति द्वारा बनवाए जा रहे गोमय पूजन सामग्री को लोगों तक पहुंचाना साथ ही स्थानीय लोगों के द्वारा बनाए जा रहे उत्पादों को बढ़ावा देना है। मार्गदर्शक श्रीयांश जैन ने भ्रमण के दौरान समिति की प्राथमिकताओं से अवगत कराते हुए स्वदेशी वस्तुओं की जानकारी दी। उन्होने कहा कि समिति भविष्य में गोबर से जुड़े सभी उत्पादों पर कार्य कर स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ावा देना उद्देश्य है। समिति सदस्य अरविंद अहिरवार ने भ्रमण टीम को स्व सहायता समूह की महिलाओं द्वारा बनाए जा रहे स्वदेशी हेल्थ केयर उत्पादों की जानकारी दी।

ओ.पी. जिंदल यूनिवर्सिटी की छात्रायें विचार कार्यालय में कर रही हैं इंटर्नशिप

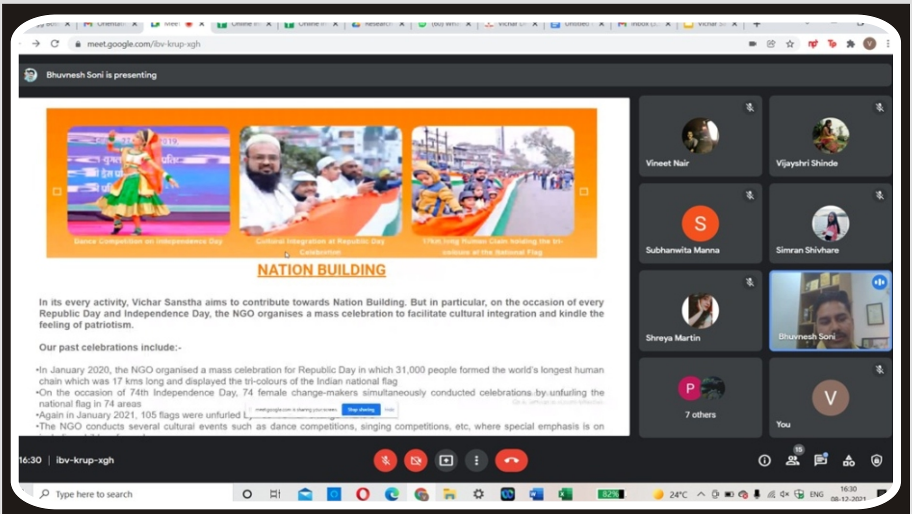

वर्चुअल माध्यम से 25 छात्र-छात्राएं ले रहे हैं इंटर्नशिप

समिति ने पिछले माह से इंटर्नशिप की शुरूआत की है। इस इंटर्नशिप का उद्देश्य महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के होनहार छात्रों को पाठ्यसामग्री के लिए उस व्यवहारिक दक्षता को उत्पन्न करना एवं पूरी तरह कुशल बनाना साथ ही कार्य स्थल पर उन्हें व्यवहारिक ज्ञान के साथ विषय की बारीकियों को समझने का अवसर देना है। इंटर्नशिप की अवधि में सीखी गई मूलभूत शिक्षा उनके भविष्य निर्माण में सहायक सिद्ध होती हैं। ओ.पी. जिंदल ग्लोबल विश्वविद्यालय सोनीपत हरियाणा की तीन छात्राएं विचार समिति में प्रशिक्षण ले रही हैं इसके अलावा 25 छात्र-छात्राएं वर्चुअल माध्यम से रिसर्च, डाक्यूमेंटेशन, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट, केस स्ट्डी, पार्टनरशिप आदि पर इंटर्नशिप कर रहे हैं।

इस अवसर पर समिति की सचिव आकांक्षा मलैया ने बताया कि इस इंटर्नशिप से छात्र-छात्राओं को समूह बनाना, क्रियात्मक गतिविधियों की जानकारी, नेतृत्व की भावना, कठिन परिस्थितियों में कार्यों को चुनौतीपूर्ण लेना एवं नए माहौल के साथ सामंजस्य बनाने के लिए तैयार करना है।

मार्गदर्शक भुवनेश सोनी ने कहा कि इंटर्नशिप में यह भी बताया जा रहा है कि सरकार की योजनाओं की जानकारी लोगों तक पहुंचाना, सागर के लोगों के जीवन स्तर

की जानकारी देना भी बताया जा रहा है।

इंटर्न के अनुभव

मैं देहरादून से हूं। ओ.पी. जिंदल ग्लोबल

यूनिवर्सिटी में जर्नलिजम एवं मॉस कम्यूनिकेशन पर स्ट्डी कर रही हूं। यूनिवर्सिटी के माध्यम से विचार समिति में इंटर्नशिप करने का मौका मिला। यह मेरे लिए एक अलग ही अनुभव है। यहां आकर मैंने मध्यप्रदेश खासतौर पर बुंदेलखंड के बारे में बहुत कुछ जाना। विचार समिति सोशल सेक्टर में बहुत ही अच्छा कार्य कर रही है जैसे एम्प्लायमेंट में लोकल प्रोडक्ट को बढ़ावा देना, महिलाओं की जनभागीदारी को बढ़ाना, स्वास्थ्य आदि। अभी हम रिसर्च, सोशल मीडिया, टीम बिल्डिंग तथा एच.आर. आदि विषयों पर कार्य कर रहे हैं साथ ही हमारा उद्देश्य है कि समिति अपने प्रोजेक्टों में किस तरह के नए-नए प्रयोगों के माध्यम से कार्य कर सकें।

वैष्णवी पाण्डेय

मैं भुवनेश्वर से हूं। ओ.पी. जिंदल यूनिवर्सिटी से जर्नलिजम एवं मॉस

कम्यूनिकेशन की छात्रा हूं। हम अभी वर्चुअल माध्यम से 25 स्टूडेंटों के साथ कंटेंट राइटिंग, रिसर्च, सोशल मीडिया, मार्केटिंग पर कार्य करना सीख रहे हैं। मैंने यहां आकर जाना कि विचार एक ऐसा एनजीओ है जो ह्यूमन डेव्लपमेंट के सभी सेक्टरों पर कार्य करता है साथ ही लोगों को जागरूक करने के लिए कार्यरत है।

स्वास्तिका पानीग्रही

मैं केरल से हूं। ओ.पी. जिंदल यूनिवर्सिटी से

पॉलीटिकल साइंस से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर अध्ययन कर रही हूं। अभी तक मैंने चार इंटर्नशिप के माध्यम से प्रालेखन, अनाथ बच्चों के जीवन तथा उनसे संबंधित एनजीओ, ग्रामीण क्षेत्र के विकास पर कार्य किया है। विचार समिति की इस इंटर्नशिप में प्रोजेक्ट डेव्लपमेंट, रिसर्च पर कार्य कर रही हूं। समिति सामाजिक बदलाव की दिशा में शिक्षा, पर्यावरण, रोजगार एवं प्राकृतिक संरक्षण में गोबर से दिया प्रोजेक्ट एक नया ही इनोवेशन है। मुझे पूरी उम्मीद है कि इस प्रोजेक्ट के जरिये बहुतों के जीवन में बदलाव आएगा। मेरी शुभकामनाएं हैं समिति अपने उत्कृष्ट कार्यों के कारण बहुत ऊंचाई तक पहुंचेगी क्योंकि महिलाओं के प्रति जागरूकता के साथ सम्मान पूर्वक जीवन की ओर कार्य एवं प्रेरित करती है। मुझे समिति सचिव आकांक्षा मलैया, भुवनेश सोनी से हर दिन कुछ न कुछ नया सीखने को मिल रहा है। यह काफी अच्छा अनुभव है।

श्री लक्ष्मी एस

स्वानंद गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र नागपुर से आई टीम ने दिया गोमय उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण

प्रशिक्षण के दौरान जीतेन्द्र भकने वंदनवार बनाकर बताते हुए।

प्राचीनकाल से गाय भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है। वैदिक काल में गाय की संख्या व्यक्ति की समृद्धि का मानक हुआ करती थी। गाय को भारतीय संस्कृति में दैवीय दर्जा प्राप्त है। मान्यता है कि गाय के शरीर में 33 करोड़ देवी देवताओं का निवास है। यही कारण है कि दीपावली के दूसरे दिन गौवर्धन पूजा के अवसर पर गायों की विशेष पूजा की जाती है। आज की मौजूदा परिस्थितियों में गाय के गोबर, गौ मूत्र से पूर्ण प्राकृतिक, कास्टमेटिक और औषधीय उत्पाद से अनेक स्वास्थ्यवर्धक उत्पाद के माध्यम से स्वरोजगार को बढ़ावा मिल रहा है। स्वानंद गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र नागपुर 2013 में स्थापित स्वामित्व आधारित संस्थान है जो पंच डाई और प्लास्टिक मोल्ड्स के निर्माता हैं। संस्थान द्वारा बनाए गए उत्पाद विशिष्ट डिजाइन, बेहतर गुणवत्ता और विश्वसनीयता के लिए व्यापक रूप से जानी जाती है। स्वानंद गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र देशी गाय के गोबर से स्वदेशी उत्पाद निर्माण कर ग्रामीण और गोपालकों को रोजगार प्रदान करके समाज के उत्थान के लक्ष्य को लेकर सामाजिक बदलाव की दिशा में दस वर्षों से कार्यरत है। यह संस्थान महिलाओं, स्व सहायता समूहों, विभिन्न संस्थानों के साथ मिलकर गोमय निर्मित सामग्री के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। इस केंद्र के संस्थापक जीतेन्द्र भकने, भाग्यश्री भकने हैं।

स्वानंद गोविज्ञान के संस्थापक जीतेन्द्र भकने ने

बताया कि इस वर्ष गोबर से निर्मित सामग्री का व्यापार 50 करोड़ से ऊपर गया है, जो दीपावली उत्सव पर मूर्तियां या सजावट की सामग्री चीन से खरीदते थे जिनमें काफी कमी आई है। इसका कारण है कि लोगों में जागरूकता आई है। यह उत्पाद हमारे देश के हैं। इसे जीडीपी का 10 प्रतिशत हिस्सा आने वाले समय में कहा जा सकता है क्योंकि हमारे पास गोबर एवं मानव संसाधन उपलब्ध है। हम संस्थाओं के माध्यम से एक लाख गांव तक इन उत्पादों का निर्माण कार्य पहुंचाना चाहते हैं। अभी तक हजारों लोग इसका कुशल प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। गांव में रहने वाले लोगों को गोबर के माध्यम से रोजगार मिल जाएगा। आज की जनरेशन में आलस्य इस तरह घर कर गया है कि वे कुछ शारीरिक रूप से काम नहीं करना चाहते और न ही कुछ नया करना चाहते हैं। जिनके परिणाम स्वरूप हम लगातार विदेशों पर निर्भर होते जा रहे हैं।इसी उदासीनता के चलते स्वदेशी उत्पादों की धीमी गतिशीलता है, पर आने वाले समय में गोबर से निर्मित सामग्री जरूर अपना स्थान बना सकेगी। आने वाले दशक गोबर क्रांति के निश्चित तौर पर कहे जा सकते हैं।

विगत दो वर्षों से विचार समिति की मोहल्ला टीमों द्वारा दीपावली एवं गणेश उत्सव के अवसर पर पूजन सामग्री तैयार करवाई जा रही थी। सामग्री की गुणवत्ता को नया रूप और सौन्दर्यीकरण की दृष्टि से स्वानंद गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र नागपुर से प्रशिक्षण हेतु जीतेन्द्र भकने जिन्होंने विचार समिति की मोहल्ला टीमों को उचित गुणवत्ता के पूर्ण गुण सिखाये साथ ही कम समय में अधिक प्रोडक्शन पर मार्गदर्शन

मोहल्ला विकास की महिलाएं धूपबत्ती बनाते हुए

दिया। ज्ञातव्य हो कि समिति ने इस वर्ष स्वरोजगार को बढ़ाने की दिशा में गोबर से निर्मित 25 लाख दिये व अन्य पूजन सामग्री बनवाने का निर्णय लिया है।

श्री भकने ने महिलाओं को गोबर से बने दिये, ओम, श्री, स्वास्तिक, शुभ, लाभ, भगवान गणेश की मूर्ति, पान पत्ता गणेश, राधाकृष्ण की मूर्ति, मोबाइल स्टेंड, मोमेंटो, पेन स्टेंड, बंधनवार, धूपवत्ती, गोमय मालाएं, झूमर, घड़ी आदि का प्रशिक्षण दिया। गोमय उत्पादों की विशेषताओं बताते हुए उन्होंने कहा कि दिया और धूपवत्ती का घर में उपयोग करने से सकारात्मक ऊर्जा आती है। वातावरण शुद्ध रहता है। यह पूरी तरह जैविक है। गाय के गोबर से बने वंधनवार को घर में लटकाने से विषेले जीवाणु घर में प्रवेश नहीं करते। भगवान गणेश-लक्ष्मी जी की गोबर से बनी प्रतीकात्मक मूर्ति घर में स्थापित करने से सुख, शांति एवं समृद्धि बनी रहती है। गोमय मालाएं धारण करने से शरीर की नकारात्मक

गोबर पीसने की पल्पलाइज़र मशीन का अवलोकन करते हुए विचार टीम के सदस्य

उर्जा का नाश होता है। गोबर से बने मोबाइल स्टेंड, मोमेंटो, पेन स्टेंड, झूमर और घड़ी पर्यावरण के अनुकूल है। इन अद्वितीय उत्पादों को अपने कमरे, कार्यालय, केबिन, लिविंग रूम के किसी भी कोने में रख सकते हैं। यह कलात्मक गोबर हस्तकृति उत्पाद आपके स्थान को एक पारंपरिक रूप प्रदान करेगा।

इस प्रशिक्षण में कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान सभी महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। सभी महिलाओं ने बहुत मन से प्रशिक्षण लिया और सभी ने गोबर से उत्पाद बनाए। उपाध्यक्ष सौरभ रांधेलिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ट्रेनिंग सेशन बहुत ही जानकारी पूर्ण रहा। समिति अब कम समय में ज्यादा दियों का निर्माण करवा सकेगी। जिससे अधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिल सकेगा और उनकी आमदनी बढ़ेगी।

मुख्य संगठक नितिन पटैरिया ने कहा कि इस प्रशिक्षण में ऐसी प्रयोगशाला लगाकर हम कुशलता पूर्वक गोमय सामग्री को बेहतर गुणवत्ता के साथ तैयार कर बाजार में मुहैया करवाएंगे। इसी को ध्यान में रखते हुए जनवरी माह से पुनः गोमय पूजन सामग्री निर्माण कार्य गतिशीलता के साथ शुरू किया जाएगा। मीडिया प्रभारी अखिलेश समैया ने कहा कि इस माध्यम से वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन और पशु धन संरक्षण के तौर तरीकों और गोपालन की ओर आकर्षित होंगे। मोहल्ला विकास समन्वयक भाग्यश्री ने बताया कि इस प्रशिक्षण के दौरान मुझे गोबर से बनने वाले अन्य उत्पादों की जानकारी मिली। समिति की यह स्वरोजगार के क्षेत्र में बहुत ही अच्छी पहल है।

स्व सहायता समूह अध्यक्ष निर्मला राजपूत ने कहा कि गोबर से निर्मित उत्पाद बनाने का कार्य मैं पिछले डेढ़-दो वर्ष से कर रही हूं। समिति से जुड़कर मुझे गोबर से कई अन्य उत्पादों की जानकारी मिली। इस प्रशिक्षण के माध्यम से हम और अच्छा कार्य कर सकेंगे। प्रशिक्षण के उपरांत अखिलेश समैया ने सभी का आभार माना।

समिति ने जयपुर में स्वदेशी उत्पादों का अवलोकन और प्रशिक्षण प्राप्त किया

समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया, सचिव आकांक्षा मलैया, भुवनेश सोनी, अभिलाषा जाटव ने जयपुर में स्वदेशी गोबर निर्मित उत्पाद संस्थानों का भ्रमण किया। राजस्थानी हस्तकला भारत वर्ष ही नहीं अपितु विश्व प्रसिद्ध है। इस भ्रमण में विभिन्न संस्थानों में जाकर निर्माण किए जा रहे स्वदेशी उत्पादों का अवलोकन तथा प्रशिक्षण प्राप्त कर समिति के स्वरोजगार प्रकल्प के माध्यम से स्थानीय स्तर को इस कला से जोड़कर स्वरोजगार को बढ़ावा देंगे साथ ही इससे भारतीय संस्कृति को संरक्षण प्राप्त होगा।

(1) ग्राम केशवपुरा - जयपुर के चाकसू के निकट स्थित ग्राम केशवपुरा में आर.एस.एस. स्वयं सेवकों द्वारा महिलाओं को प्रशिक्षण देकर 500-600 मूर्तियां प्रतिदिन बनवाई जाती हैं एवं गोमय जैविक, गुलाल, दिया, गोमय मालाएं, ओम, श्री, स्वास्तिक, वंदनवार एवं अन्य साज-सज्जा सामग्री का निर्माण एवं बिक्री की जाती है।

(2) कुमारप्पा नेशनल हैंडमेड पेपर इंस्टीट्यूट - यह एक विश्व स्तरीय संस्थान है। यह सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के तहत एक स्वायत्त निकाय है जो भारतीय हस्त निर्मित कागज एवं पेंट उद्योग के विकास के लिए कार्यरत है। इस संस्था का प्राकृतिक पेंट पूरे देश में बहुचर्चित है।

(3) गोकृति संस्थान - एक अनूठी पहल के साथ गोकृति संस्थान ने गाय के गोबर से कागज निर्माण का अविष्कार किया जो वर्तमान युग की आवश्यकताओं के अनुरूप है। यह कागज 100 प्रतिशत पुनः नवीनीकरण के योग्य है साथ ही बाजार में अन्य कागजों की गुणवत्ता के समान है। गाय के गोबर से बने इस कागज में वनस्पति बीज होते हैं। कागज अगर फेंक भी दिया जाए तो उसमें मौजूद बीज तुलसी, गांदर, साबुन आदि के पेड़ उगेंगे जिससे प्रकृति को संरक्षण मिलेगा।

(4) सेंटर फॉर डेव्लपमेंट कम्युनिकेशन एवं स्ट्डीज - यह संस्थान शिक्षाविदों, स्थानीय विशेषज्ञों, पूर्व सरकारी थिंक टैंक और विकास पेशेवरों द्वारा परिकल्पित और मूल आधारित विकास संगठन है जो कि स्वतंत्र और समान नागरिकों से मुक्त एक सशक्त नागरिक समाज की स्थापना करना जो अपनी समस्याओं को हल सके और समाज के सबसे कम सुविधा वाले लोगों को लाभ और सशक्त बनाने के लिए काम कर सकें। संस्थान के निर्देशक डॉ. उपेन्द्र के. सिंह से समिति सचिव आकांक्षा मलैया ने मुलाकात की साथ ही विचार की प्राथमिकताओं से अवगत करवाते हुए गोमय पूजन किट भेंट की।

(5) भारतीय संस्कृति हस्तशिल्प - यह संस्थान भारतीय संस्कृति से संबंधित स्वदेशी हस्तनिर्मित उत्पाद निर्माण कार्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस संस्थान के मुख्य उत्पादों में पेपर निर्मित पूजा थाली, की हैंगर, अशोक स्तंभ, टेबिल घड़ी आदि पर सटीक डिजाइनिंग के साथ अपने उत्पादों में महारत हासिल है। इस संस्थान ने 50 लाख का वार्षिक लाभ प्राप्त किया है।

(6) धेनुकृपा गोवर्ती पंचगव्य - धेनुकृपा गोमय गुणवत्ता पूर्ण धूपवत्ती, गोबर वालपुट्टी एवं गोबर पेंट आदि स्वदेशी उत्पाद निर्माण पर कार्य कर रही है। गोमय पुट्टी पेंट विकरण अवशोषक प्रकृति के अनुकूल एवं सात्विक और सकारात्मक उर्जा प्रदान करती है।

गणतंत्र दिवस पर सागरवासी करेंगे 1100 जगह झंडावंदन

समिति द्वारा 15 अगस्त को भी 1133 जगह झंडावंदन किया गया था। चित्र उसी अवसर का।

मित्रो, गणतंत्र दिवस वर्ष के दौरान मनाए जाने वाले सबसे प्रसिद्ध उत्सवों में से एक है। यह एक विशेष उत्सव उस दिन की याद में मनाया जाता है जब भारत का संविधान लागू किया गया था, यानि 26 जनवरी 1950 में। भारत ने अधिकारिक रूप से अपने आप को एक स्वतंत्र राष्ट्र की मान्यता दी थी। इस 73वे गणतंत्र दिवस के अवसर पर आपकी विचार समिति पुनः 1100 जगह झंडावंदन करवाने का लक्ष्य रख रही है। यह हमारे लिए ठीक वैसी ही ऐतिहासिक घड़ी है जिस प्रकार संपूर्ण शहर ने एक धागे में बंधकर 17 किलोमीटर लंबी तिरंगा मानव श्रृंखला यात्रा निकालकर राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत होकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड लंदन में दर्ज करवाया था। साथ ही 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर शहर के अलग-अलग स्थानों पर 1133 की संख्या में झंडावंदन करवाकर पूरे शहर में राष्ट्रीयता की धूम मचा दी थी। जिसमें भारतीय संविधानिक मूल्यों, विचार, अभिव्यक्ति, स्वतंत्रता, समता, समानता को स्पष्ट रूप से देखा एवं महसूस किया गया था। समिति का लक्ष्य है कि बुंदेलखंड के लोगों के सामाजिक, आर्थिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन के अलावा उनके मन में आत्मविश्वास, सम्मान, गौरव के साथ राष्ट्र के प्रति भावनाओं का विकास करना है। इस आयोजन को शहर के अधिकारियों, कर्मचारियों, वरिष्ठ जनों, सामान्य नागरिकों, माताएं, बहनें, बच्चे, बुजुर्ग बड़े उत्साह के साथ कार्यक्रम को सफल बनाएंगे।

विचार समिति की ओर से गणतंत्र दिवस की अग्रिम शुभकामनाएं

कपिल मलैया
संस्थापक अध्यक्ष
विचार समिति

मीडिया कवरेज

दैनिक भास्कर सागर 01-12-2021

विचार संस्था और रांधेलिया परिवार ने जरूरतमंदों के लिए कटरा बाजार में शुरू की नेकी की दीवार

भास्कर संवाददाता | सागर

विचार संस्था की टीम ने शहर में नेकी की दीवार शुरू की।

विचार समिति और रांधेलिया परिवार के संयुक्त तत्वावधान में नेकी की दीवार का शुभारंभ रांधेलिया निवास कटरा में हुआ। नेकी की दीवार का उद्देश्य जो आपके पास अधिक है यहां छोड़ जाएं और जो आपकी जरूरत का है यहां से ले जाएं। इस अवसर पर विचार समिति उपाध्यक्ष सौरभ रांधेलिया ने बताया कि नेकी की दीवार के माध्यम से जरूरतमंद लोगों को उनकी जरूरत की चीजें आसानी से उपलब्ध हो सकेंगी। उन्होंने शहरवासियों से जरूरतमंद लोगों की हर संभव मदद करने के लिए आगे आने की अपील की। विचार समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने कहा कि तिलकगंज रोड पर पहले से एक नेकी की दीवार बनी हुई है। इस पर अभी तक लोग कपड़े और जरूरत का सामान छोड़ कर जाते हैं ताकि जरूरतमंद सामान का उपयोग कर सकें। जिसके पास कपड़े नहीं उन्हें कपड़े मिल सकें। अब इस दीवार के माध्यम से अधिक से अधिक लोग सहयोगी बन सकेंगे। विचार समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने बताया कि यह नेकी की दीवार शहर के बीचों-बीच होने से लोगों को अधिक से अधिक सहयोग मिल सकेगा। इस दौरान विचार समिति सचिव आकांक्षा मलैया, श्रीयांश जैन, अखिलेश समैया, मनोज राय, प्रीति जैन, सरिता जैन, साधना जैन, सुधीर अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

राज एक्सप्रेस

नेकी की दीवार का हुआ शुभारंभ

सागर(आरएनएन)। विचार समीति और रांधेलिया परिवार के संयुक्त तत्वावधान में नेकी की दीवार का शुभारंभ रांधेलिया निवास कटरा में हुआ। नेकी की दीवार का उद्देश्य है कि जो आपके पास अधिक है यहां छोड़ जाएं और जो आपकी जरूरत का है यहां से ले जाएं। इस अवसर पर विचार समिति उपाध्यक्ष सौरभ रांधेलिया ने बताया कि नेकी की दीवार के माध्यम से जरूरतमंद लोगों को उनकी जरूरत की चीजें आसानी से उपलब्ध हो सकेंगी।

आगे आने की अपील

का सामान छोड़ कर जाते हैं ताकि जरूरतमंद सामानों का उपयोग कर सकें। जिसके पास कपड़े नहीं उन्हें कपड़े मिल सकें।

अब इस दीवार के माध्यम से अधिक से अधिक लोग सहयोगी बन सकेंगे। इस मौके पर आकांक्षा मलैया, श्रीयांश जैन, अखिलेश समैया, मनोज राय, प्रीति जैन, सरिता जैन, साधना जैन, सुधीर अग्रवाल, प्रशांत गंगवाल, राहुल विश्वकर्मा अंकित ठाकुर आदि उपस्थित थे।

॥विचार समिति॥

(स्थापना वर्ष 2003)

निवेदन

आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक मात्रा में दान देकर इस मुहिम को आगे बढ़ाने में सहयोग करें।

दान राशि बैंक खाते में डालने हेतु जानकारी इस प्रकार है।

Bank a/c name- VicharSamiti

Bank- State Bank of India

Account No.- 37941791894

IFSC code- SBIN0000475

Paytm/ Phonepe/ Googlepay/ upi

आदि दान करने के लिए नीचे दिए गए

QR कोड को स्कैन करें.

- संपर्क -

Website : vicharsanstha.com

Facebook : Vichar Sanstha

Youtube : Vichar Samachar

Ph. No. : 9575737475, 9009780042, 07582-224488

Address : 258/1, Malgodam Road, Tilakganj Ward, Behind Adinath Cars Pvt. Ltd, Sagar (M.P.) 470002